दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 58* ❑ *अंक-5* ❑ *दिल्ली* ❑ *जनवरी 2020 (प्रथम)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न

बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी के मूलमंत्र को अपनाकर दलित अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व शैक्षणिक अधिकार पा सकेंगे–डॉ. सत्यनारायण जटिया

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का द्विदिवसीय 35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 8–9 दिसम्बर, 2019 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी बाई पास), आउटर रिंग रोड, दिल्ली में सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महासम्मेलन में भारत के अलावा नेपाल, भूटान, इंग्लैंड, अमेरिका, श्रीलंका, यूएई आदि विदेशों के लगभग 10 हजार दलितोत्थान से जुड़े दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, समाजसेवियों ने भाग लेकर दलितोत्थान सम्बन्धी विषयों पर विचार विमर्श किया।

सम्मेलन का उद्घाटन भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री संघप्रिय गौतम द्वारा भगवान बुद्ध तथा बाबा साहब डा. अम्बेडकर के चित्रों पर माल्यार्पण कर और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री संघप्रिय गौतम ने की। सांसद (राज्य सभा) डा. सत्यनारायण जटिया, अध्यक्ष–स्थायी समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार समारोह में मुख्य अतिथि थे। महाराष्ट्र सरकार के पूर्व समाज कल्याण मंत्री नाना बबनराव घोलप, श्री ठाकुरचन्द्र गहतराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष–नेपाल दलित साहित्य अकादमी, श्री उत्तम कुमार परियार, माननीय सदस्य–रायल कौंसिल, नेपाल, श्री ओ.पी. आजाद, राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.के. (ग्रेट ब्रिटेन)–भारतीय दलित साहित्य अकादमी, श्री के.पी. चौधरी, सेक्रेट्री जनरल–आल इंडिया फेडरेशन आफ एस.सी./एस.टी. ओर्गनाइजेशन, श्री संजीव झा, विधायक, श्रीमती श्यामा सुन्दरी, एडवोकेट–सुप्रीम कोर्ट, श्रीमती रेखा सिन्हा, निगम पार्षद, श्री नीरज सेठी, राष्ट्रीय अध्यक्ष–सर्वशक्ति सेना, प्रो. पी. विष्णुमूर्ति, अध्यक्ष–साउथ इंडिया स्टेट कमेटी, बी.डी.एस.ए., श्री ब्रिजलाल रविदास, अध्यक्ष–नॉर्थ इंडिया स्टेट कमेटी, बी.डी.एस.ए. डॉ. जे.आर. सोनी, चेयरमैन–गुरू घासीदास शोधपीठ, छत्तीसगढ़ सरकार, प्रो. रतनलाल सोनाग्र, प्रसिद्ध दलित साहित्यकार आदि ने इस महासम्मेलन में विशिष्ठ अतिथि के रूप में सहभागिता कर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई।

इस राष्ट्रीय सम्मेलन का प्रारम्भ श्री सी.एम. पिप्पल की बुद्ध वन्दना तथा श्री राजेन्द्र छोकर की भीम वन्दना गायन से हुआ।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने अपने स्वागत भाषण में देश–विदेश से आये हजारों प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि गत 35 वर्षों में भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य, दलित कला व संस्कृति की स्थापना व अभिवृद्धि तथा दलितोत्थान के लिए जनचेतना अभियान के रूप में जो कार्य किये हैं, उसका साक्षात् परिदृश्य आज पंचशील आश्रम के इस खचाखच भरे दलित प्रतिनिधियों की उपस्थिति के रूप में देखने को मिल रहा है। अकादमी ने दलित साहित्य की अवधारणा, सीमा और उसके लेखन की दशा व दिशा का जो प्रतिपादन किया उसके कारण आज देश की सभी भाषाओं में दलित साहित्यकार पैदा हुए जिन्होंने अपने दलित लेखन से दलित साहित्य की रचना कर दलित साहित्य का अंबार लगा दिया है। आज दलित साहित्य सभी विश्वविद्यालयों, कालेजों व स्कूलों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जा रहा है, दलित साहित्य पर विचार गोष्ठी, सेमिनार, प्रतियोगितायें कराई जा रही है। भारत सरकार की यू.जी.सी. ऐसे सेमिनार व संगोष्ठी पर विशेष अनुदान देकर, दलित साहित्य को प्रोत्साहित कर रही है। इससे अन्य भाषाओं के विद्वान दलित साहित्य की संरचना की ओर

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

बुद्ध, रविदास, कबीर की परम्परा के महान संत थे गुरू घासीदास

–डॉ. सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संत गुरू घासीदास भगवान बुद्ध, गुरू रविदास और सद्गुरू कबीर की परम्परा के महान संत थे।

संत गुरू घासीदास जी की 263वीं जयन्ती समारोह में, जो 18 दिसम्बर, 2019 को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में आयोजित हुआ था, उसमें उपस्थित संत जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ढाई हजार साल पहले भगवान बुद्ध ने बोधगया में तपस्या करके जो ज्ञान प्राप्त किया था, उसी तरह गुरू घासीदास जी ने सन् 1820 में छाता नामक पर्वत प्रदेश में 6 मास घोर तपस्या करके आत्मज्ञान की अनुभूति हुई। उसके बाद गुरू घासीदास जी ने अपने अनुयायियों को 'सतनाम' का दैवी सन्देश दिया। भगवान बुद्ध ने जहां अपने अनुयायियों को अष्टमार्गी सन्देश दिया था, वहीं गुरू घासीदास जी ने सात सूत्री सन्देश दिया, जो 'सतनामी सन्देश' कहलाया, इसके अन्तर्गत 1. मादक पदार्थों से परहेज करो। 2. मांस तथा मांस जैसी वस्तुओं से परहेज करो। 3. सामाजिक एकता की आचार संहिता का पालन करो। 4. मूर्ति पूजा बन्द करो। 5. गायों को हलों में जोतना बन्द करो। 6. दोपहर के बाद खेतों में चल चलाना तथा खेतों में भोजन ले जाना बंद करो। 7. एकमात्र सृष्टिकर्ता 'सतनाम' की निराकार उपासना, भजन और ध्यान करो। इस तरह उन्होंने भगवान बुद्ध की तरह अहिंसा, करुणा और प्रेम का उपदेश दिया।

गुरू रविदास जी ने कहा था–''ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न। छोट बड़े सब सम बसैं, रविदास रहे प्रसन्न।'' अपने इस समतावादी, लोकतांत्रिक राज्य के विषय में उन्होंने कहा–''रविदास मानुष बसन कूं, सुखकर है दुई ठांव। एक है 'स्वराज्य' में, दूसरा मरघट धाम।।'' 'स्वराज्य' कैसा हो, इसकी कल्पना उन्होंने अपनी प्रसिद्ध साखी–'बेगमपुरा' में की है–

बेगमपुरा शहर को नाऊं, दोयम, अधम ना तेही पाऊं, अर्थात् 'बेगमपुर' ऐसा समतावादी, लोकतांत्रिक राष्ट्र है जहां कोई गम नहीं, ऊंच–नीच, छोटा–बड़ा की भावना नहीं, जहां कोई रोक टोक, टैक्स, चुंगी नहीं, जहां न रोजी–रोटी की चिन्ता है, सब आपसी भाईचारे के साथ प्रेम भाव से शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

गुरू रविदास जी की 'बेगमपुरा' राष्ट्र की कल्पना को गुरू घासीदास जी ने अपने समतावादी, लोकतांत्रिक सतनामी समाज की स्थापना कर पूरा किया।

गुरू रविदास जी ने मूर्ति पूजा, ब्राह्मणवाद, धार्मिक पाखंड, वर्ण व्यवस्था जात–पांत का विरोध करके मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहा कि आपको कहीं गंगा स्नान, पूजा पाठ करने की जरूरत नहीं। उन्होंने स्वयं अपनी चमड़े की कुन्डी में साक्षात् गंगा का आह्वान कर कहा–'जिसका मन चंगा, उसकी खटोटी में गंगा।''

गुरू रविदास जी की तरह सद्गुरू कबीर ने भी मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहा–''कबीरा मन पावन हुआ, जैसे गंगा नीर, पीछे पीछे हरि फिरै, कहत कबीर–कबीर।''

गुरू घासीदास जी ने भी मन की शुद्धता पर बल देते हुए अपने जीवन में 'सतनाम' को आत्मसात् करने का उपदेश दिया, और यह तभी सम्भव है जब आपका 'मन' पवित्र हो, तभी आप अध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

आजादी की लड़ाई में वाल्मीकि वीरों का योगदान

• जी.आर. बंजारे 'ज्वाला'

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जी हमारी परम्परा के पुरोधा थे। रामायण जैसी कालजयी रचना के माध्यम से उन्होंने भारतीय साहित्यगार को जिस प्रकार समृद्ध किया, वह स्तुत्य है। महर्षि वाल्मीकि जी ने श्रीरामचन्द्र के जीवन का सम्पूर्ण वर्णन किया, साथ ही लव–कुश को शिक्षा एवं दीक्षा दी। हमारे वाल्मीकि समाज के ऐसे महान धर्मगुरु, ब्रह्म श्रेष्ठ, आदि कवि की प्रेरणामयी जीवनी से सारा संसार आलोकित हो रहा है।

समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए हजरत जाहरवीर गोगा जी महाराज का नाम प्रातः स्मरणीय है। जिनका जन्म सन् 1000 वर्ष, भाद्र कृष्ण नवमी के दिन गांव ददरेडा, जिला हनुमानगढ़, राजस्थान में चौहान वंश में हुआ था। माता का नाम बाछल व पिता का नाम जेवरसिंह, दादा का नाम उमरसिंह तथा मौसी का नाम काछल था। अवतारी पुत्र प्राप्ति के लिए माता बाछल ने गुरु गोरखनाथ जी की कठोर आराधना की तो गुरु गोरखनाथ जी की समाधी टूट गयी और अपने 14 सौ चेलों को साथ लेकर माता बाछल को आशीर्वाद देने कारण प्यासे कर्मचारी को अपमान सा लगा। उन्होंने उस सैनिक से कहा–''बड़ा आया है ब्राम्हण को बेटा, जिन कारतुर्सों का तुम उपयोग करते हो उन पर ''गाय'' और ''सुअर'' की चर्बी लगाई जाती है। जिन्हें तुम अपने दातों से तोड़कर बन्दुक से मारते हो। उस समय तुम्हारा ब्राह्मणत्व और धर्म कहां चला जाता है? क्या किसी प्यासे व्यक्ति को पानी पीने के लिए लोटा देने से तुम्हारा धर्म भ्रष्ट हो जायेगा? धिक्कार तुम्हारे इस ब्राह्मणत्व को। यह सुनकर ब्राह्मण सैनिक चौंक गया।

वह अछूत व्यक्ति और कोई नहीं था माता दीन भंगी था, जिन्होंने हिन्दुस्तानी सिपाहियों की आंखे खोल दी तथा क्रांति के लिए प्रथम चिन्गारी सैनिक छावनी में फेंक दी। पूरी छावनी में मातादीन की बात की चर्चा जंगल में आग की तरह फैल गई। देखते–देखते क्रांति की ज्वाला में मंगल पांडे धधक उठे। 1 मार्च, 1857 में सुबह परेड के मैदान में मंगल पांडे लाईन से निकल कर बाहर आ गये, और अधर्मी अंग्रेजों को इन बातों के लिए दोषी ठहराते हुए गोलियां चलाने लगें। उसने विद्रोह कर दिया। यही नारियों की टोली ने अंग्रेज सैनिकों पर हमला कर दिया। अंग्रेज सैनिक दहशत में आ गये। ये महिला अपने हाथों में दरात, गड़ासे जैसे साधारण हथियारों से युक्त थी। युद्ध के दौरान इन महिलाओं ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। अंत में लड़ते–लड़ते वीरांगना महाबीरी देवी की मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी टोली के साथ वीरगति को प्राप्त हो गई।

अमर शहीद रामचन्द्र भंगी–30 मार्च 1919 को रौलट एक्ट के विरुद्ध देश भर में दुकानों तथा कारखानों में हड़ताल करने की घोषणा की गयी तथा यह भी कहा गया कि लोग एक दिन का अनशन भी करे। 30 तारीख को ही दिल्ली में सत्याग्रह कर दिया गया। दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर झगड़ा हो गया तथा रेल्वे पुलिस द्वारा दो कर्मचारियों की गिरफ्तारी से लोगों में क्रोध फैल गया। अंत में भीड़ पर गोली चलाई गयी। इसमें आठ व्यक्ति शहीद हुए और लगभग दस लोग घायल हुआ तथा अपने देश के लिए प्राणों की आहूति दे दी।

किया। कालान्तर में ये आने वाले संतानों ने देखा कि हमारे पिता, बुजुर्ग, भाई बहन गंदा पेशा कर रहे हैं, उसे वे नई संतान बगैर किसी दबाव के करने लगा जो बाद में एक जाति का रूप बनकर यह समाज एक घिनौनी कार्य पद्धति में फंस गया।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर वाल्मिक समाज को मान–सम्मान दिलाने एवं हक और अधिकार दिलाने के लिए पूरी जिन्दगी संघर्ष करते रहे। आज हमारा समाज अपने मूल लक्ष्य से भटक गया है। गलत मानसिकता के कारण गली–मोहल्लों के ढेर (कचरा) फेंकने के लिए लड़ते रहता है। हमारे पूर्वज जो कभी राजा–महाराजा और क्रांतिवीर हुआ करते थे उनकी संतान आज गुलाम और हताश नजर आता है जो राज–पाट की लड़ाई से कोसों दूर ही नहीं वरन् शिक्षा से भी काफी दूर है।

सन् साल 1857 के विद्रोह को याद करने का साल है। सन् 2019 में इस विद्रोह की 162 वीं सालगिरह पड़ रही है। इस आजादी की लड़ाई में सभी वर्गी, धर्मों एवं जातियों के लोगों ने शिरकत की थी इस उम्मीद के साथ कि आजादी रूपी अमृत की जो वर्षा होगी वह हमारे आंगन में गिरेगी यानी सुख एवं समृद्धि का लाभ हमें भी मिल जाएगा। लेकिन आज नतीजा यह है कि अमीर और अमीर होता जा रहा है, गरीब और गरीब हो रहा है। ऐसा नहीं है कि अछूतों दलितों के कल्याण और विकास के लिए शासन ने कोई कारगर योजनाएं लागू नहीं की है, लेकिन नीति बेहतर किन्तु नियत साफ नहीं होने के कारण आजादी के 73वीं वर्षगांठ तथा स्वतंत्र भारत के 73 साल बाद भी दलितों, खासकर वाल्मिक समाज की दशा एवं समस्या आज भी ज्यों का त्यों है।

अतः महात्मा बुद्ध के अमृत वचन–''अतो दीपो भव'' और अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया'' अपनी प्रकाश और अपनी स्वामी स्वयं बनो को अपनायें, वाल्मिक समाज जो वर्तमान में नारकीय जिन्दगी जी रहा है। उसकी बहाली और संघर्ष की इस लड़ाई में शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक और इनसे उपजे अनगिनत मुद्दों और सवालों पर भी गंभीरता से विवेचना कर एक ठोस एवं सार्थक रास्ता बनाना होगा। आइये हम इस लड़ाई में कुछ कदम साथ चलें–जो हमारी तीसरी आजादी होगी। •

निकल पड़े। गुरु गोरखनाथ जी ने अपनी झोली में से गोगल निकाल माता बाछल को दिया और कहा जा तेरा पुत्र संसार का कल्याणकारी होगा।

महान क्रांतिकारी खुसरव (भंगी) 13 अप्रैल, 1320 को खुसरव भंगी दिल्ली की गद्दी पर बैठा था। वह गुजरात का रहने वाला था और जाति का भंगी था। उसने अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र तत्कालीन बादशाह मुबारक खां को मौत के घाट उतार कर भारत को तुर्की से स्वतंत्र करा लिया था। 5 दिसम्बर, 1320 को खुसरव ने युद्ध में वीरतापूर्वक इन्द्रप्रस्त के पास विद्रोहयों का मुकाबला करते हुए वीरगति पाई।

अमर शहीद मातादीन भंगी वाल्मीकि—बैरकपुर छावनी जो कलकत्ता से 16 मील दूर है, वहां कारतूस बनाने का एक कारखाना था। इस कारखाने में काम करने वाले बहुत से व्यक्ति अछूत समझी जाने वाली कौम के थे। एक दिन इस अछूत जाति के एक व्यक्ति को प्यास लगी। उन्होंने एक सैनिक से लोटा मांगा, वह सैनिक मंगल पांडे सरीखा कर्मकांडी ब्राह्मण था। उन्होंने लोटा मांगने वाले व्यक्ति से जो फैक्ट्री कर्मचारी था, लोटा यह समझकर नहीं दिया कि वह नीच जाति का एक अछूत व्यक्ति है। लोटा न मिलने के वह घड़ी है जब से क्रांति का सुत्रपात हुआ और काम कर गई मातादीन की वह चिन्गारी। घायल अवस्था में मंगल पांडे गिरफ्तार किये गये। 8 अप्रैल, 1857 को पल्टनों के सम्मुख इन्हें फांसी पर लटकाया गया।

10 मई, 1857 को बैरकपुर छावनी में क्राांति की लहर दौड़ गई और सम्पूर्ण क्रांति के लिए हिन्दु–मुसलमान सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। जिसमें अनेक भारत मां के सपूत शहीद हुए और गिरफ्तार किये उनमें मातादीन भंगी प्रमुख थे। जो चार्ज शीट बनाई गई थी उसमें सबसे पहला नाम मातादीन भंगी का था। सभी गिरफ्तार क्रांतिकारियों को कोर्ट मार्शल किया गया। मातादीन भंगी मातृभूमि की रक्षा करने के आरोप में शहीद हुये।

अमर वीरांगना महावीरी देवी (भंगी) ग्राम मुडभर–भाजू, तहसील कैराना जिला मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) की रहने वाली थी। वीरांगना महावीरी देवी ने अपने समाजल की नारियों का एक संगठन बनाया, जिसका उद्देश्य था घृणित कार्यों में लगी महिलाओं व बच्चों का हटाना और सम्मान के लिए जीना और सम्मान के लिए मरना। सन् 1857 में अंग्रेजों ने जब मुजफ्फर नगर को अपने अधिकार में लेने के लिए आक्रमण किया तब महावीरी देवी के नेतृत्व में गठित स्वाभिमानी 22

अमर शहीद बल्लू मेहतर 24 मई 1857 तो क्रांति का ज्वालामुखी मानो फूट पड़ा। 26 मई 1857 को एटा जनपद सोरों क्षेत्र की क्रांति ज्वाला में **चेतराम जाटव व बल्लू मेहतर** अपन प्राणों की आहूति देने कूद पड़े। इस क्रांति में उनके साथ सदाशिव मेहरे, रामनाथ तिवारी, चतुर्भुज वैश्य, सदामुख राय सक्सेना, विशम्भर कोठेदार, व्दारिका प्रसाद तथा हफीज रजब अली आदि भी थे। सभी क्रांतिवीरों को गिरफ्तार किया गया। चेतराम जाटव वे बल्लू मेहतर जो क्रांति के प्राण थे। उन्हें पेड़ों से बांध कर गोलियों से उड़ा दिया गया। बाकी को कासगंज में पेड़ों पर लटका कर फांसी दी गई।

मनुवादी व्यवस्था के अनुसार वाल्मीकि समाज को पूरे देश में क्षेत्रीय आधार पर हम भंगी, मेहतर, लाल बेगी, हेला, थरकर, ढेड़, ढेर नामों से जानते हैं। यह समाज द्रविण संस्कृति से लेकर वर्तमान तक काफी संघर्षशील एवं जुझारू प्रवृत्ति का रहा है तथा समय–समय पर देश में होने वाली क्रांतियों में भी बढ़–चढ़कर देश की रक्षा हेतु आपको कुर्बान किया है किन्तु मनुवादी व्यवस्था के हिमायती लोगों ने इस समाज को नीचा दिखाने की दृष्टि से एवं मनोबल गिराने के लिए ''सफाई'' करने का जो सबसे घटिया किस्म का काम करने के लिए मजबूर

बुद्ध ने कहा था...

• अज्ञान और अविधा में पड़े व्यक्ति की दशा अत्यन्त दयनीय होती है। वह हर प्रकार से असमर्थ होता है। वह स्वयं का भला नहीं कर पाता और दूसरों का भी भला करने में अक्षम होता है। ऐसे लोगों की भीड़ किस काम की? एक अंधा दूसरे अंधे के पीछे उसके पीछे तीसरा, चौथा, पांचवां... ऐसे लोग व्यर्थ में जीवन जीते हैं। बाल पका कर बूढ़े हो जाते हैं, उनका जीवन चक्र अनन्त हो जाता है, वे मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

• प्रमादी, आलसी, निठल्ले लोग मरे हुए हैं।

• चलते रहो चलते रहो। जब तक मंजिल न आ जाये, चलते रहो। सोये हुए के साथ धोखा होता है, किन्तु जगे हुए के साथ धोखा नहीं।

• पहले मन का इलाज किया जाए।

• संतुलन ही जीवन की परम साधना है। जीवन को सच्चे अर्थों में जीने का अर्थ है संयम द्वारा। इसे न तो इतना कस देना कि यह टूट जाए, न ही आलस्य प्रमाद द्वारा इतना ढीला छोड़ देना कि इसमें कोई स्वर ही न निकले। जीवन में कर्म ही सर्वश्रेष्ठ है, यही मानव को सर्वोत्कृष्ट बनाता है।

• सच्चे धर्म को चुनो। यूं धर्म बहुत हैं किन्तु सभी अच्छे मार्ग की ओर नहीं जाते। बुद्ध धर्म बुद्धि का विशुद्धि मार्ग है। यह आरम्भ में, मध्यम में और अन्त में कल्याणकारी है। जो मनुष्य इस मार्ग पर चलेगा वह अपना कल्याण कर सकेगा।

• मनुष्य किसी की हत्या न करे, चोरी न करे, झूठ न बोले, नशीले पदार्थों से बचे, व्यभिचार से दूर रहे, अपनी जीविका का कोई अच्छा साधन अपनाए और भिक्षुओं को यथा समर्थ भोजन, वस्त्र आदि का दान करे, इस प्रकार जो मनुष्य सद्धर्म का पालन करेगा वह उन्नति को प्राप्त होगा।

• जो मनुष्य अपनी तृष्णाओं पर काबू पा लेता है वह संसार में ऐसे ही रहता है जैसे पानी में कमल।

• जिस प्रकार स्वर्णकार थोड़ा थोड़ा करके चांदी के मैल को दूर कर देता है उसी प्रकार बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि थोड़ा–थोड़ा करके अपने मन के मैल को दूर कर दे।

• बैर से बैर कभी भी इस संसार में शान्त नहीं हुआ। बैर को अबैर से ही शान्त किया जा सकता है, यह ही अनादिकाल से नियम है।

– गुलाबचन्द बारासा

पृष्ठ 1 का शेष...बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी के मूलमंत्र को अपनाकर दलित अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व शैक्षणिक अधिकार पा सकेंगे–डॉ. सत्यनारायण जटिया

आकर्षित हुए हैं।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि अकादमी ने दलित इतिहास, दलित कला, दलित संस्कृति की विरासत, दलित वीर नायक–नायिकाओं, महापुरुषों, समाज– सुधारकों, मूल निवासियों की धरोहर मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल आदि सभ्यताओं की खोज कर ब्राह्मणवादी अवधारणा उनके ब्राह्मणवादी साहित्य और शास्त्रों की झूठी परिकल्पनाओं, अनगिनत देवी–देवताओं, पूर्व जन्म के कर्म, स्वर्ग–नरक, वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, ऊंच–नीच के भेदभाव का पर्दाफाश करके मानवीय मूल्यों की स्थापना की है, जहां देश की सत्ता, सम्पदा, जमीन– जायदाद पर सभी नागरिकों का बराबर का अधिकार है। अकादमी ने भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समता, स्वतंत्रता, बन्धुता, न्याय को बढ़ावा देकर अलोकतांत्रिक सामाजिक विषमताओं का सदैव विरोध किया है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के समक्ष सभी धर्म बराबर हैं और उनके सभी अनुयायी को भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार दिये जाने की प्रदेश, जाति विशेष का–जो भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों और सबको बराबर का सम्मान व सत्ता–सम्पदा में एक बराबरी का विचार रखता है–उन सबका मैं अकादमी की ओर से अभिनन्दन करता हूं–खासकर उन लोगों का जिनके हाथ का छुआ खाना–पानी यहां का हिन्दूवादी ब्राह्मण, पांडे, पंडित व अन्य उच्चवर्णाधिकारी परहेज करते हैं, अकादमी उन्हें गले लगाती है और उनके समता के अधिकार के लिए अकादमी सदैव प्रयासरत रहेगी। आज मैं अकादमी की ओर से उन सबका पुनः अभिनन्दन करता हूं और आशा करता हूं कि इन्सानियत के इस दोहरे मापदंड को खत्म करने के लिए आप सब अकादमी के परचम के नीचे कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ेंगे। यही भगवान बुद्ध, गुरू रविदास, महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द, बाबू जगजीवन राम और बाबा साहब डा. अम्बेडकर का सपना था जिसे हमें पूरा करना है। जय भीम–जयभारत–नमो बुद्धाय।

सम्मेलन में मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं सांसद (राज्यसभा) डा. सत्यनारायण जटिया, ने अपने कार्यान्वयन पर दबाब बनाये रखना चाहिए। दलितों को अपने बच्चों की शिक्षा पर जोर देना चाहिए क्योंकि शिक्षा उन्नति व प्रगति की पहली सीढ़ी है जिसके बल पर वे शासन–प्रशासन में अपना उचित स्थान पा सकते हैं। दूसरी ओर सरकारों का भी यह दायित्व व कर्त्तव्य है कि वह सामाजिक समता के लिए दलितों की शिक्षा, रोजगार, आरक्षणपूर्ति, सुरक्षा और न्याय प्रदान कराने प्राथमिकता दे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी के अकेले जीवन्त सहयोगी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री संघप्रिय गौतम ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी दलितों में दलित साहित्य द्वारा वैचारिक क्रान्ति फैलाकर डा. अम्बेडकर जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का सराहनीय कार्य कर रही है। बाबा साहब चाहते थे कि दलितों को शिक्षित होकर, संगठित होकर फिर संघर्ष करके देश के धन, धरती, सत्ता व सम्पदा पर काबिज होना है।

श्री संघप्रिय गौतम ने अपने भाषण में कहा कि मेरी पहचान पूर्व केन्द्रीय मंत्री के कारण नहीं, बल्कि इसलिए है कि बाबा साहब साहित्य अकादमी है तो हमारी दलित साहित्य अकादमी है। सवर्णों के पास ब्राह्मणी हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र है तो हमारे पास भी दलित साहित्य के उन्नायक डा. सोहनपाल सुमनाक्षर है। इसलिए प्रत्येक दलित को अपना सिर ऊंचा करके गर्व के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

नेपाल दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री ठाकुर चन्द्र गहतराज ने कहा कि नेपाल के दलितों का भारत के दलितों के साथ काफी पुराना सम्बन्ध है। नेपाल के दलित नेता मा. टी.आर. विश्वकर्मा स्वयं भारतीय दलित साहित्य अकादमी के स्थापना समारोह में शामिल थे। उनके नेतृत्व में नेपाल में भी छुआछूत के खिलाफ आन्दोलन हुए और कई दलित नेता राजसत्ता में भी मंत्री व उच्च पदों पर पहुंचे। यह सब अकादमी की वैचारिक क्रान्ति के कारण ही संभव हो सका।

नेपाल रॉयल कौन्सिल के माननीय सदस्य श्री उत्तम कुमार परिहार ने कहा कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी के जन आन्दोलन से सीख लेकर नेपाल में भी सत्ता–सम्पदा–सम्मान के लिए वहां के दलितों में जागरूकता आई है

आनर' (सम्मान पट्टिका) की शील्ड व शाल देकर सम्मानित किया। अन्त में 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान के साथ सम्मेलन के समपान की घोषणा की गई।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में अकादमी के सभी पदाधिकारियों का पूर्ण सहयोग रहा। सम्मेलन में इनकी उपस्थिति सराहनीय रही। उत्तर प्रदेश से प्रदेशाध्यक्ष डा. लालती देवी, प्रो. कालीचरण 'स्नेही', श्री दयानाथ निगम, राजस्थान से प्रो. आत्माराम उपाध्याय, श्री संतोष कुमार कालोसिया, चांदमल मेघवंशी, श्री धर्मपाल बौद्ध, हरियाणा से प्रो. रमेश डीगवाल, डा. सुरेन्द्र सेलवाल, श्री जरनैल सिंह रंगा, श्री गुरुदयाल मोरथला, पंजाब से श्री तीरथ तोंगडिया, श्री लालचंद रविदासी, इंजी. रूपचन्द, हिमाचल प्रदेश से श्री निरतराम राखा, जम्मू–कश्मीर से इंजी. एच.आर. फोंसा, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बिहार से श्री जागाराम शास्त्री, श्री गुरुदयाल शास्त्री, डॉ. कामेश्वर सिंह, झारखंड से श्री अनिल बांसफोड़, डॉ. राजू राम, छत्तीसगढ़ से श्री जी.एस. बंजारे 'ज्वाला', श्री नन्द किशोर यादव, डॉ. जे.आर. सोनी, डॉ. उदयकुमार, श्रीमती भानुमति कोसरे, कर्नाटक

पक्षधर है। अतीत का इतिहास गवाह है कि हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था–ब्राह्मणवाद के उत्पीड़न से त्रस्त होकर समता, बन्धुता व प्यार की आस में अछूत–दलित लोग जिस धर्म में भी गये वहां भी उन्होंने उस धर्मावलम्बियों की गिनती तो बढ़ाई, पर उन्हें वह 'सम्मान' नहीं मिल सका जिसकी की उन्होंने आशा की थी। वहां भी 'अछूतपन' और ऊंच– नीच की भावना ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। हिन्दू धर्म से जो दलित अछूत मुस्लिम धर्म में गये उन्हें वहां 'मुसल्ली' कहकर पुकारा गया, जो ईसाई धर्म में गये उन्हें वहां 'डेविड', 'दास', 'मसीह' नाम से अलग पहचान दी गई, जो सिख धर्म में गये, उन्हें वहां 'महजबी' अलग नाम दिया गया, जो आर्य समाज में गये, वहां उन्हें 'महाशय' कहकर पुकारा गया। पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी उन सभी मानवीय अधिकार और सम्मान से वंचित दलितों के लिए शरण की स्थली है जहां सभी को बराबर का सम्मान, समता, भाईचारा, प्यार, एक ही शमियाने के नीचे उपलब्ध है।

यह सम्मेलन भारतीय दलित साहित्य अकादमी के समता, स्वतंत्रता, बन्धुता, न्याय के साथ सभी को पूरा 'सम्मान' प्रदान करने की अवधारणा को साकार कर रहा है। अकादमी के इस सम्मेलन में न कोई धर्म का प्रतिबन्ध है, न भाषा, भाषण में कहा कि समाज में सबको सम्मान मिले, सबको समता मिले, प्रत्येक नागरिक अपनी आस्था, विश्वास के साथ अपना कार्य करते हुए निर्भीकता के साथ जिये, यह उसका संवैधानिक मौलिक अधिकार है। भारतीय दलित साहित्य अकादमी पिछले 34–35 वर्षों से देश में सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध अपने वैचारिक क्रान्ति द्वारा लोगों में जो जनचेतना का कार्य कर रही है, उसके लिए अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर जी की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। उन्होंने देश में सभी भाषाओं में दलित साहित्य लेखन कराकर विषमता भरे ब्राह्मणवादी साहित्य को नकार दिया है और हर दलित के मन में समता व सम्मान की लड़ाई को तेज किया है।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी ने दलितोत्थान के लिए जो तीन मूल मंत्र दिये थे–'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' पर हम अगर पूरी तरह अमल करेंगे तो बहुत जल्दी ही देश की सत्ता, सम्पदा, धन–दौलत पर काबिज हो सकेंगे।

डा. जटिया जी ने कहा कि वैसे तो सरकार दलितों के उत्थान के लिए विचारशील है और उनके उन्नति व विकास के लिए अनेक योजनायें संचालित कर रही है पर दलितों को अपने अधिकारों के लिए जागरूक होकर सरकारों पर उनके डा. अम्बेडकर के साथ मैंने काम किया है, उनके कथन व निर्देशन के अनुसार अपने जीवन को ढाला है। बाबा साहब के सिद्धांतों के सामने कभी सत्ता मोह को तरजीह नहीं दी। केन्द्रीय मंत्री रहते हुए बाबा साहब के सिद्धांतों पर अडिग रहकर उनके सपनों को साकार करने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया।

महाराष्ट्र सरकार के पूर्व समाज कल्याण मंत्री नाना बबनराव घोलप ने कहा कि हमारा दलित समाज सैकड़ों जातियों–उपजातियों में बंटा है। हमें अपनी इन जातियों में परस्पर रोटी–बेटी का व्यवहार शुरू करना चाहिए, तभी हमारी एकजुटता बनेगी और हम ताकतवर बनेंगे। इस एकजुटता के लिए हमने पूरे भारत में भ्रमण के लिए 'गुरू रविदास रथ यात्रा' का कार्यक्रम बनाया है, जिसमें आपका सहयोग वांछित रहेगा।

दलित सेना, दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री ज्ञान चन्द गौतम ने अपने जोरदार जोशीले भाषण में बताया कि हम किसी से कम नहीं हैं लेखन में, पराक्रम में, परिश्रम में, बहादुरी में। महर्षि वाल्मीकि, वेदव्यास हमारे पास हैं जिन्होंने रामायण और महाभारत की रचना की। बाबा साहब डा. अम्बेडकर हैं जिन्होंने वर्ण व्यवस्था की जनक मनुस्मृति की होली जलाकर भारतीय संविधान की रचना की। भारत सरकार की और वे सामाजिक विषमता, छुआछूत और गैर–बराबरी के खिलाफ आवाज उठाने लगे हैं। राजसत्ता में भी हिस्सेदारी के लिए संघर्ष जारी है। इसके लिए अकादमी बधाई की पात्र है।

विशिष्ठ अतिथि इंजी. एच.आर. फोंसा, हरियाणा के पूर्व गवर्नर बाबू परमानन्द के पुत्र डा. राजेन्द्र प्रसाद, अकादमी की दक्षिण भारत के राज्यों की समिति के अध्यक्ष प्रो. पी. विष्णुमूर्ति, पूर्वोत्तर भारत राज्यों की समिति के अध्यक्ष श्री बी.एल. रविदास ने अपने उद्‌बोधन में उनके द्वारा किये जा रहे दलितोत्थान कार्यों पर प्रकाश डालते हुए अकादमी के कार्यों की प्रशंसा की।

सम्मेलन के दूसरे दिन का कार्यक्रम 'अधिकार दिवस' के रूप में आयोजित किया गया। इस दिन सभी प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने अपने–अपने प्रदेशों की दलित सम्बन्धी समस्यायें रखीं और उनके निराकरण के लिए सुझाव दिये। इस दिन के कार्यक्रम में दलित साहित्य विधा पर प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण किया गया और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सम्मेलन के समापन पर जहां विभिन्न प्रदेशों की ओर से अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर का अभिनन्दन किया गया, वहीं अकादमी की ओर से डॉ. सुमनाक्षर ने अकादमी के सभी प्रदेशाध्यक्षों एवं पदाधिकारियों को 'पलक आफ से श्री चेलुवाराजू, श्री सुभाष कानड़े एवं श्री जी. प्रताप, गुजरात से श्री जसवन्त सिंह जड़ेजा, श्री अशोक धेला, श्री नट्टू भाई श्रीमाली, श्री जी.जे. पांडया, श्री मंगल सूरजकर, श्री के.जी. सौरठिया, तमिलनाडु से डॉ. सी.पी. देसी एड. चन्द्रशेखर, आसाम से श्री ब्रिजलाल रविदास, मणिपुर से श्री आर. के. गुणचन्द्रा तथा वाई. महेन्द्रकुमार सिंह, त्रिपुरा से श्री सुजीत भौमिक, महाराष्ट्र से प्रो. रतन लाल सोनाग्रा, प्रो. संजय मोरे, पांडिचेरी से प्रो. पी. विष्णुमूर्ति, केरल से श्री टी. बालाकृष्णन, श्री पेरूमल राजप्पन, श्री जॉन कुडवेली, आंध्र प्रदेश से श्री जी. धनशेखर, उत्तराखंड से प्रो. जयपाल सिंह, दिल्ली से डॉ. राजमल 'राज', श्री ज्ञानचंद गौतम, श्री सी.एम. पीपल, मध्य प्रदेश से श्री पी.सी. बैरवा, श्री हरिनारायन हिंडोलिया, पश्चिम बंगाल से श्री सुसान्तो, श्री अशोक हलधर, डा. किशनराज गट्टानी, तेलंगाना से डॉ. एम. जितेन्द्र 'मनु', सिक्किम से श्रीमती गीता रुचाल, ओड़िसा से श्री दीपक रंजन बाघ तथा किशोर भोई। सम्मेलन को सफल बनाने में अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री जय सुमनाक्षर, सुश्री सन्धि सुमनाक्षर, श्री धीरज वर्मा, श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर, श्री जरनल सिंह रंगा, श्री कवल मलिक, श्री संजय अग्रवाल, श्री गगन श्रीवास्तव आदि का सराहनीय योगदान रहा। प्रो. रतन लाल

हिमायती
4 / जनवरी (प्रथम), 2020 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 1-2 जनवरी, 2020

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर, 2019

पृष्ठ 1 का शेष...बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी के मूलमंत्र को अपनाकर दलित अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व शैक्षणिक अधिकार पा सकेंगे–डॉ. सत्यनारायण जटिया

सोनाग्रा ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया।

सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गये–

1. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति को सरकारी महकमों में 22½ प्रतिशत आरक्षण तो है, पर उन्हें पदोन्नति में आरक्षण नहीं दिया जाता। यह सम्मेलन सरकार से मांग करता है कि उन्हें पदोन्नति में आरक्षण दिये जाने का प्रावधान संविधान में संशोधन करके करायें।

2. अभी तक न्यायपालिका यानि नीची अदालतों से सुप्रीम कोर्ट तक जजों की नियुक्ति में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का आरक्षण कोटा लागू नहीं है। ऐसी स्थिति में दलितों का 'जज' बनने में भारी उपेक्षा बरती जाती है। न्यायपालिका में सवर्ण जजों का वर्चस्व होने के कारण दलितों को पूर्ण न्याय नहीं मिल पाता। अतः यह सम्मेलन में न्यायपालिका के सभी पदों पर दलितों के लिए संविधान प्रदत्त 'आरक्षण कोटा' का प्रावधान लागू किया जाये।

3. स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत सरकार अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम चलाये और छुआछूत, भेदभाव, ऊंचनीच, जात–पांत बरतने वालों पर सख्ती से कार्रवाई करे।

4. अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति अत्याचार निरोधक कानून लागू करने में जो ढिलाई पुलिस थानों में बरती जाती है उस पर सख्ती से कार्रवाई की जाए ताकि दलितों पर अत्याचार रुक सकें।

5. आज शिक्षा, चिकित्सा और न्याय बहुत महंगा हो गया है। ऐसी हालत में दलित का समाज में समान स्तर पर लाना असम्भव है। अतः दलितों के उत्थान को ध्यान में रखकर सरकार उन्हें यह सब मुफ्त उपलब्ध कराये और इस विषय में तुरन्त कानून बनाये।

6. सरकारी व निजी क्षेत्रों में दिये जाने वाले ठेकों, नौकरियों, पेट्रोल पम्पों, गैस एजेन्सियों में दलितों का उनकी आबादी के अनुसार आरक्षण कोटा निर्धारित किया जाए और ये सब उन्हें सुगमता से उपलब्ध कराये जाएं।

7. सरकार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की नौकरियों में आरक्षित कोटे को पूर्ण रूप से लागू करे। गत वर्षों के जो लाखों आरक्षित पद खाली पड़े हैं, उनको विशेष भर्ती अभियान के तहत भरती करके पूरा करे।

8. सरकार राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, अनुसूचित जनजाति आयोग व पिछड़ा वर्ग आयोग को न्यायिक अधिकार देकर सशक्त बनाये ताकि दलित, शोषित, उत्पीड़ित लोगों को समय सीमा में न्याय मिल सके।

9. सरकार दलित मीडिया सेंटर स्थापन, समाचार पत्र व टी.वी. चैनल संचालित करने हेतु संचार लाइसेंस की विशेष सुविधा देकर दलित मीडिया कर्मियों व दलित साहित्यकारों को प्रोत्साहित करे।

10. सभी राज्यों में समता के प्रेरक बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर व बाबू जगजीवन राम के नाम पर विश्वविद्यालय खोले जाएं, जहां 80 फीसदी सीटें दलित छात्रों के लिए आरक्षित की जाएं।

11. सभी राज्यों के शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रमों में सन्त शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी, सद्गुरु कबीरदास जी व गुरु घासीदास जी की जीवनी को शामिल किया जाए।

12. देश में लाखों एकड़ खाली व बेकार पड़ी जमीन सरकार भूमिहीन दलित परिवारों में वितरित कराये।

13. भारत सरकार ने 1978 से पंचवर्षीय योजनाओं में 'कम्पोनेन्ट प्लान' के अन्तर्गत दलितों की आबादी के हिसाब से जो धनराशि आवंटित की थी, वह कभी भी उन पर पूरी तरह से खर्च नहीं की गई। अब तक जमा पड़ी वह धनराशि विशेष कार्यक्रम बनाकर दलितों के कल्याण व विकास पर खर्च की जाए।

14. सरकार दलित साहित्य को स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में लगवाये और सरकारी पुस्तकालयों व प्रतिष्ठानों के लिए दलित साहित्य की सीधी खरीद कर दलित साहित्यकारों को प्रोत्साहित करे।

15. देश की अन्य साहित्यिक व सांस्कृतिक अकादमियों की तरह सरकार भारतीय दलित साहित्य अकादमी को एक मुक्त राशि अनुदान के रूप में दे ताकि अकादमी अपनी विभिन्न योजनाओं को साकार रूप दे सके।

16. सरकार राज्यसभा में सदस्य, राज्यपाल, विदेश दूतावासों के पदों पर दलित साहित्यकारों को मनोनीत करे और प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस व पन्द्रह अगस्त के समारोहों में उन्हें 'मानद उपाधि' से सम्मानित करके अलंकृत करें।

17. भारतीय दलित साहित्य अकादमी का 36वां राष्ट्रीय सम्मेलन 'अन्तर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन' नाम से आयोजित किया जाएगा।

18. भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष आगे से भारतीय दलित साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष होंगे। इस पद पर उनके कार्यकाल की अवधि दिसम्बर, 2025 तक होगी। ये सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

इस अवसर पर दलित साहित्यकारों ने आत्म सम्मान के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प लिया। डॉ. सुमनाक्षर ने पारित प्रस्तावों को उचित कार्रवाई के लिए सम्बन्धित विभागों को भेजने की घोषणा करने और सम्मेलन में पधारे अतिथियों के धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रीय गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। •

सम्पादकीय का शेष....बुद्ध, रविदास, कबीर की परम्परा के महान संत थे गुरू घासीदास –डॉ. सुमनाक्षर

सद्गुरू कबीर ने कहा–''कबीरा खड़ा बाजार में लेऊ लखुटिया हाय, जो घर बारे अपना चले हमारे साथ।'' गुरू घासीदास ने गुरू रविदास और सद्गुरू कबीर से 'निर्भीकता' की सीख ली। गुरू रविदास जी ने मधुमक्खियों के उदाहरण देते हुए कहा था–'साध संगति मिल जुल रहो जैसी मधुप मतीरा।'' मधुमक्खियों के छते पर कोई हाथ रखता है तो वे सब उस पर टूट पड़ती हैं। गुरू घासीदास जी ने भी अपने अनुयायियों को मधुमक्खियों की तरह मिल जुलकर रहने की सीख दी और कहा कि कोई दुराचारी किसी सतनामी' के साथ अत्याचार, अन्याय, दुराचार करता है तो अन्य सतनामी उसके साथ अन्याय होते चुप न बैठें, बल्कि मधुमक्खियों की तरह उस अत्याचारी पर टूट पड़ें। उनके इस आदेश से सतनामियों में, क्रान्तिकारी भावना जाग्रत हुई और उन्होंने सतनामियों को उत्पीड़ित करने वालों को धकियाया, लात घूंसों से पीटा और उन्हें भालों से छेद दिया। परिणाम स्वरूप पुरानी व्यवस्था पलट गई और गांव में कोई दूसरी जाति का व्यक्ति सतनामियों पर शारीरिक उत्पीड़न करने से डरने लगा। सच्चे अर्थों में गुरू घासीदास जी ने जीव–जन्तुओं पर दया करने के साथ अपने सतनामी अनुयायियों को निर्भीक, निडर और आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिकता के रूप में सबल बनाया जिसके कारण ही आज सतनामी समाज सामाजिक विषमताओं से दूर अपने पैरों पर खड़े होकर देश–विदेश में अपनी अलग पहचान बनाये हुए। ऐसे 'सतनामी' समाज के प्रेरक महान संत बाबा गुरू घासीदास जी को नमन के साथ जय सतनाम।

अपने अध्यक्षीय भाषण खत्म करने से पूर्व डा. सुमनाक्षर ने इस समारोह के संयोजक गुरू घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष श्री के.पी. खांडे, महासचिव डा. जे.आर. सोनी का आभार व्यक्त करते हुए इस सफल संयोजन के लिए बधाई दी।

समारोह की विशेष झलकियां

रायपुर में छत्तीसगढ़ में अवतरित 'मनखे–मनखे एक समान' का संदेश देने वाले बाबा गुरू घासीदास की 263वीं जयंती 18 दिसम्बर को सतनामी समाज के लोगों ने हर्षोल्लास के साथ मनाई। पंथी नृत्य व मंगल आरती के साथ सभी पवित्र जैतखामों में पुराने ध्वज को बदलकर सफेद ध्वज का नया पालो चढ़ाया गया। इस दौरान सुबह से ही सभी सतनामी बाहुल्य बस्तियों में उमंग–उत्साह का माहौल रहा तथा गुरुजी की अमृतवाणियां गुंजायमान होती रही।

गुरू घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के प्रदेश अध्यक्ष श्री के.पी. खण्डे व प्रवक्ता चेतन चंदेल ने बताया कि सार्वजनिक जयंती समारोह का मुख्य आयोजन न्यू राजेन्द्र नगर स्थित सांस्कृतिक भवन प्रांगण में हुआ, जहां 40 फीट ऊंचे जैतखाम में क्रेन की सहायता से एस.के. सोनवानी, जी. आर. बाघमारे व संजय कुर्रे ने सफेद ध्वज का नया पालो चढ़ाया। इस दौरान महिलाएं ने अपने–अपने घरों से लाए हुए महाप्रसाद व मालपुवा सहित फल, फूल, नारियल अर्पित कर विशेष पूजा–अर्चना की। सामूहिक लयबद्ध स्तुति करते हुए जैतखाम के फेरे लिए गए। तत्पश्चात पंथी नृत्य की प्रस्तुति हुई। सभी ने एक स्वर में 18 दिसम्बर अमर रहे' का जयकारा लगाते हुए गुरुजी के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

संगोष्ठी के स्वागताध्यक्ष डॉ. जे. आर. सोनी ने बताया कि इस मौक पर 'भारत में सतनामी संतों का सामाजिक समरसता में योगदान' विषय पर साहित्यक संगोष्ठी हुई, जिसके मुख्य अतिथि थे पं. रविवि रायपुर के कुलपति डॉ. केशरीलाल वर्मा। साथ ही भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, दिनेश साध मुम्बई, डॉ. कालीचरण सनेही, लखनऊ, डॉ. दादू लाल जोशी, डॉ. अनिल भतपहरी, डॉ. डी.एन. खुटे, डॉ. रमेंद्रनाथ मिश्र, डॉ. आर.एस.पी. त्यागी, डॉ. राजेश रांझा, नवतन साध आदि विशेष रूप से सम्मिलित थे। सभी ने एक स्वर में कहा कि बाबा गुरू घासीदास जी ने मनखे–मनखे एक समान का संदेश देकर आपसी भाईचारा व सौहार्द्र का जो बीज बोया था उसी का परिणाम है कि आज देश में अमन–चैन कायम है।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य के **मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल** ने शाल, शील्ड, प्रशस्ति पत्र देकर इन महानुभाव को सम्मानित किया। वे हैं–

1. **बाबा गुरू घासीदास सम्मान धार्मिक प्रचार के लिए**
   श्री नवरतन साध, बरेली को
2. **गुरू अमरदास सम्मान साहित्य क्षेत्र के लिए**
   डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, दिल्ली
3. **गुरू बालकदास सम्मान खेल के क्षेत्र में**
   श्री अजीत ओगरे, राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित को
4. **राजमहंत नैनदास महिलांग सम्मान**, सामाजिक कार्यकर्ता
   डॉ. कालीचरण सनेही को
5. **स्व. नकूल ढीढी, पंथी गीत एवं नृत्य**
   श्री दिनेश जांगड़े, कुटेसर को
6. **स्व. नरसिंह मंडल स्मृति सम्मान,** संगठन क्षेत्र में
   श्री धर्मवीर सिंह साध को
7. **स्व. राकेश सोनी स्मृति सम्मान, कला क्षेत्र में**
   श्री मोहनचंद्र सुन्दरानी, रायपुर
8. **स्व. हिरौंदा बाई मारकण्डे, बालिका शिक्षा एवं नशा मुक्ति के लिए**
   बाबा कमलेश दास को
9. **स्व. दुलारूदास ढ़ीढ़ी, शिक्षा प्रचार के लिए**
   डॉ. ओ.पी. वर्मा, संचालक विद्यापीठ, रायपुर
10. **गुरू घासीदास विशिष्ट सेवा पुरस्कार से श्री सुभाष कानडे, (कर्नाटक), श्री दिनेश साध (मुंबई), डॉ. राजेश रांझा (करनाल)** को सम्मानित किया गया।

– जय सुमनाक्षर

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009